श्री गीता चालीसा

श्री गीता चालीसा

श्री गीता चालीसा

अन्तर्राष्ट्रीय गीता सोसायटी के लक्ष्य और उद्देश्य

१. श्रीमद् भगवद्गीता की मूल असाम्प्रदायिक सार्वभौमिक शिक्षा का सहज-सरल भाषा में अनुवाद तथा प्रकाशन द्वारा नाममात्र सहयोग-राशि-मूल्य पर वितरण करना. गीता का पुस्तकालयों, अस्पतालों, होटलों, मोटलों तथा अन्य सार्वजनिक स्थानों में वितरण करना, जैसा कि अमेरिकन बाइबिल सोसायटी विश्वभर में बाइबिल का प्रचार-प्रसार करती है.

२. देश-देश में सोसायटी की शाखाओं की स्थापना करना.

३. गीता-अध्ययन और सत्संग सभाओं की स्थापना में सहयोग और मार्गदर्शन देना तथा युवा, छात्र-वर्ग और व्यस्त व्यावसायिक प्रशासकों एवं अन्य रुचि रखनेवालों में गीता का पत्राचार द्वारा निःशुल्क प्रशिक्षण करना.

४. वैदिक ज्ञान के अध्ययन और प्रसार में जुटे अन्य व्यक्तियों तथा लाभ-निरपेक्ष संस्थाओं को प्रेरणा, सहयोग और सहायता देना तथा आध्यात्मिक, तत्त्वज्ञान, ध्यानयोग आदि पर व्याख्यानों, परिसंवादों और संक्षिप्त पाठ्यक्रमों की व्यवस्था करना.

५. वेदों, उपनिषदों, गीता, रामायण तथा विश्व के अन्य प्रमुख धर्मग्रन्थों की शाश्वत असाम्प्रदायिक शिक्षा के माध्यम से विभिन्न धर्मों के बीच की खाई को पाटना तथा सब वर्णों, जातियों, धर्मों और वर्गों में एकता पैदा करना एवं मानव जाति में विश्वबन्धुत्व की भावना का प्रसार करना.

लेखक के बारे में–

डाक्टर रामानन्द प्रसाद सानफ्रान्सिसस्को खाड़ी क्षेत्र के अनेक जनसेवी संस्थानों के प्रस्थापक सदस्य हैं. उन्हों ने अमेरिकन/ अन्तर्राष्ट्रीय गीता सोसायटी की स्थापना की है, जिसका उद्देश्य श्रीमद्भगवद्गीता तथा अन्य हिन्दू धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम से मानवता की सेवा करना और महान् मनीषियों तथा विश्व के अन्य प्रमुख धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम से संसार की सभी संस्कृतियों, जातियों, धर्मों तथा मतों के बीच एकता स्थापित करना है.

इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ टैकनोलोजी, खड़गपुर से स्नातक उपाधि प्राप्त करने के बाद उन्हों ने यूनिवर्सिटी ऑफ टोराण्टो से एम.एस. की उपाधि प्राप्त की और यूनिवर्सिटी ऑफ इलीनॉय से सिविल इंजीनियरिंग में पी.एच.डी. की. डाक्टर प्रसाद राज्य और केन्द्र की सरकारों में कार्यरत रहने के साथ साथ अध्यापक, शोधकर्ता और सलाहकार के रूप में भी काम करते रहे हैं.

वर्तमान में वे सानहोज़े स्टेट यूनिवर्सिटी में सिविल इंजीनियरिंग के प्राध्यापक पद से अवकाश प्राप्त हैं. साथ ही वे ग्रेज्युएट कॉलिज ऑफ दी यूनियन इंस्टीच्यूट ऑफ सिनसिनेटी, ओहायो, में धर्म और मनोविज्ञान के अनुबन्धित प्राध्यापक भी हैं.

श्रीगीताचालीसा

(दैनिक पाठ के लिए)

वसुदेवसुतं देवं, कंसचाणूरमर्दनम् ।
देवकीपरमानन्दं, कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥१॥
मूकं करोति वाचालं, पङ्गुं लङ्घयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे, परमानन्दमाधवम् ॥२॥

धृतराष्ट्र उवाच –
धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे, समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव, किम् अकुर्वत संजय ॥१.०१॥

धृतराष्ट्र बोले – हे संजय, धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में एकत्र हुए युद्ध के इच्छुक मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या-क्या किया? (१.०१)

The King inquired: Sanjaya, please, now tell me in detail, what did my people (the Kauravas) and the Pandavas do in the battlefield before the war started? (1.01)

संजय उवाच –
तं तथा कृपयाविष्टम् , अश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तम् इदं वाक्यम् , उवाच मधुसूदनः ॥२.०१॥

संजय बोले– इस तरह करुणा से व्याप्त, आंसू भरे, व्याकुल नेत्रों वाले, शोकयुक्त अर्जुन से भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा. (२.०१)

Sanjaya said: Lord Krishna spoke these words to Arjuna whose eyes were tearful and downcast and who was overwhelmed with compassion and despair. (2.01)

श्रीभगवानुवाच –
अशोच्यान् अन्वशोचस् त्वं, प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
गतासून् अगतासूंश्च, नानुशोचन्ति पण्डिताः ॥२.११॥

श्रीभगवान् बोले – हे अर्जुन, तू ज्ञानियों की तरह बातें करते हो, लेकिन जिनके लिए शोक नहीं करना चाहिए, उनके लिए शोक करते हो. ज्ञानी मृत या जीवित किसी के लिए भी शोक नहीं करते. (२.११)

Lord Krishna said: You grieve for those who are not worthy of grief and yet speak words of wisdom. The wise grieve neither for the living nor for the dead. (2.11)

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे, कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर् , धीरस् तत्र न मुह्यति ।।२.१३।।

जैसे इसी जीवन में जीवात्मा बाल, युवा, और वृद्ध शरीर प्राप्त करता है, वैसे ही जीवात्मा मृत्यु के बाद दूसरा शरीर प्राप्त करता है. इसलिए धीर पुरुष को मृत्यु से घबराना नहीं चाहिए. (२.१३)

Just as the soul acquires a childhood body, a youth body, and an old-age body during this life, similarly, the soul acquires another body after death. This should not delude the wise. (See also 15.08) (2.13)

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्य् ,
अन्यानि संयाति नवानि देही ।।२.२२।।

जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को उतार कर दूसरे नये वस्त्र धारण करता है, वैसे ही जीवात्मा मृत्यु के बाद पुराने शरीर को त्याग कर नया शरीर प्राप्त करता है. (२.२२)

Just as a person puts on new garments after discarding the old ones, similarly, the living entity or the individual soul acquires other new bodies after casting away the old bodies. (2.22)

सुखदुखे समे कृत्वा, लाभालाभौ जयाजयौ ।
ततो युद्धाय युज्यस्व, नैवं पापम् अवाप्स्यसि ॥२.३८॥

सुख-दुख, लाभ-हानि, और जीत-हार की चिन्ता न करके मनुष्य को अपनी शक्ति के अनुसार कर्तव्य कर्म करना चाहिए. ऐसे भाव से कर्म करने पर मनुष्य को पाप नहीं लगता. (२.३८)

Treating pleasure and pain, gain and loss, and victory and defeat alike, engage yourself in your duty. By doing your duty this way, you will not incur any sin. (2.38)

कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर् भूर् , मा ते सङ्गोऽस्त्व् अकर्मणि ॥२.४७॥

केवल कर्म करना ही मनुष्य के वश में है, कर्मफल नहीं. इसलिए तुम कर्मफल की आसक्ति में न फँसो, तथा अपने कर्म का त्याग भी न करो. (२.४७)

You have control over doing your respective duty only, but no control or claim over the results. To enjoy the fruits of work should not be your motive, and you should never be inactive. (2.47)

बुद्धियुक्तो जहातीह, उभे सुकृतदुष्कृते ।
तस्माद् योगाय युज्यस्व, योगः कर्मसु कौशलम् ।।२.५०।।

कर्मफल की आसक्ति त्याग कर काम करने वाला निष्काम कर्मयोगी इसी जीवन में पाप और पुण्य से मुक्त हो जाता है, इसलिए तू निष्काम कर्मयोगी बन. निष्काम कर्मयोग को ही कुशलता पूर्वक कर्म करना कहते हैं. (२.५०)

A KarmaYogi or the selfless person becomes free from both vice and virtue in this life itself. Therefore, strive for selfless service. Working to the best of one's abilities without becoming attached to the fruits of work is called KarmaYoga or Seva. (2.50)

इन्द्रियाणां हि चरतां, यन् मनोऽनुविधीयते ।
तदस्य हरति प्रज्ञां, वायुर् नावम् इवाम्भसि ॥२.६७॥

जैसे जल में तैरती नाव को तूफान उसे अपने लक्ष्य से दूर ढ़केल देता है, वैसे ही इन्द्रिय सुख मनुष्य की बुद्धि को गलत रास्ते की ओर ले जाता है. (२.६७)

The mind, when controlled by the roving senses, steals away the intellect as a storm takes away a boat on the sea from its destination — the spiritual shore of peace and happiness. (2.67)

प्रकृतेः क्रियमाणानि, गुणैः कर्माणि सर्वशः ।
अहंकारविमूढात्मा, कर्ताहम् इति मन्यते ।।३.२७।।

वास्तव में संसार के सारे कार्य प्रकृति मां के गुणरूपी परमेश्वर की शक्ति के द्वारा किए जाते हैं, परन्तु अज्ञानवश मनुष्य अपने आपको कर्ता समझ लेता है, तथा कर्मफल के बंधनों से बंध जाता है. मनुष्य तो परम शक्ति के हाथ की केवल एक कठपुतली मात्र है. (३.२७)

All actions are performed by the forces (or Gunas) of Nature, but due to delusion of ego or ignorance, people assume themselves to be the doer. (See also 5.09, 13.29, and 14.19) (3.27)

एवं बुद्धेः परं बुद्ध्वा, संस्तभ्यात्मानम् आत्मना ।
जहि शत्रुं महाबाहो, कामरूपं दुरासदम् ।।३.४३।।

आत्मा को मन और बुद्धि से श्रेष्ठ जानकर, (सेवा, ध्यान, पूजन, आदि से किए हुए शुद्ध) बुद्धि द्वारा मन को वश में करके, हे महाबाहो, तुम इस दुर्जय कामरूपी शत्रु का विनाश करो. (३.४३)

Thus, knowing the Self to be the highest, and controlling the mind by the intellect (that is purified and made strong by Self-knowledge), one must kill this mighty enemy, lust (with the sword of true knowledge of the Self), O Arjuna. (See also KaU 1.03.03-04) (3.43)

यदा यदा हि धर्मस्य, ग्लानिर् भवति भारत ।
अभ्युत्थानम् अधर्मस्य, तदात्मानं सृजाम्यहम् ।।४.०७।।

हे अर्जुन, जब-जब संसार में धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब- तब मैं, परब्रह्म परमात्मा, प्रकट होता हूँ. (४.०७)

Whenever there is a decline of Dharma (Righteousness) and a predominance of Adharma (Unrighteousness), O Arjuna, I manifest Myself. I appear from time to time for protecting the good, for transforming the wicked, and for establishing world order (Dharma). (4.07-08)

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं, गुणकर्मविभागशः ।
तस्य कर्तारम् अपि मां, विद्धि अकर्तारम् अव्ययम् ॥४.१३॥

मेरे द्वारा ही चारो वर्ण अपने-अपने गुण, स्वभाव, और रुचि अनुसार बनाए गए हैं. सृष्टि के रचना आदि कर्म के कर्ता होनेपर भी मुझ परमेश्वर को अविनाशी तथा अकर्ता ही जानना चाहिए, क्योंकि प्रकृति के गुण ही संसार चला रहे हैं. (४.१३)

I created the four divisions of human society based on aptitude and vocation. Though I am the author of this system of division of labor, one should know that I do nothing (directly), and I am eternal. (See also 18.41) (4.13)

कर्मण्य् अकर्म यः पश्येद् , अकर्मणि च कर्म यः ।
स बुद्धिमान् मनुष्येषु , स युक्तः कृत्स्नकर्मकृत् ॥४.१८॥

जो मनुष्य कर्म में अकर्म तथा अकर्म में कर्म देखता है वही ज्ञानी, योगी, तथा समस्त कर्मों का करने वाला है. अपने को कर्ता नहीं मान कर प्रकृति के गुणों को ही कर्ता मानना कर्म में अकर्म तथा अकर्म में कर्म देखना कहलाता है. (४.१८)

One who sees inaction in action and action in inaction, is a wise person. Such a person is a yogi and has accomplished everything. (See also 3.05, 3.27, 5.08 and 13.29) (4.18)

ब्रह्मार्पणं ब्रह्म हविर् , ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणा हुतम् ।
ब्रह्मैव तेन गन्तव्यं, ब्रह्मकर्मसमाधिना ।।४.२४।।

यज्ञ का अर्पण, घी, अग्नि, तथा आहुति देनेवाला सभी परब्रह्म परमात्मा ही है. इस तरह जो सब कुछ परमात्मा स्वरूप देखता है, वह परमात्मा को प्राप्त होता है. (४.२४)

The divine Spirit (Brahma or Eternal Being) has become everything. Divinity (Brahma, Self or Spirit) shall be realized by one who considers everything as a manifestation (or an act) of Brahma. (Also see 9.16) (4.24)

न हि ज्ञानेन सदृशं, पवित्रम् इह विद्यते ।
तत् स्वयं योगसंसिद्धः, कालेनात्मनि विन्दति ।।४.३८।।

कर्मयोग मनुष्य के चित्त और बुद्धि को शुद्ध करके उसके सभी कर्मों को पवित्र कर देता है. ठीक समय आने पर शुद्ध बुद्धि द्वारा योगी ईश्वर का दर्शन करता है. (४.३८)

Truly, there is no purifier in this world like the true knowledge of the Supreme Being. One discovers this knowledge within, naturally, in course of time (when one's mind is cleansed of selfishness by KarmaYoga). (4.38)

संन्यासस् तु महाबाहो, दुखम् आप्तुम् अयोगतः ।
योगयुक्तो मुनिर् ब्रह्म, नचिरेणाधिगच्छति ।।५.०६।।

हे अर्जुन, कर्मयोग की निःस्वार्थ सेवा के बिना शुद्ध संन्यास-भाव, अर्थात सम्पूर्ण कर्मों में कर्तापन का त्याग, प्राप्त होना कठिन है. निष्काम कर्मयोगी शीघ्र ही परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त करता है. (५.०६)

But true renunciation (the renunciation of doership and ownership), O Arjuna, is difficult to attain without KarmaYoga. A sage equipped with KarmaYoga quickly attains Nirvana. (See also 4.31, 4.38, 5.08) (5.06)

ब्रह्मण्य् आधाय कर्माणि, सङ्गं त्यक्त्वा करोति यः ।
लिप्यते न स पापेन, पद्मपत्रम् इवाम्भसा ॥५.१०॥

जो मनुष्य कर्मफल में लोभ और आसक्ति त्यागकर, सभी कर्मों को परमात्मा में अर्पण करता है, वह कमल के पत्ते की तरह पापरूपी जल से कभी लिप्त नहीं होता. (५.१०)

One who does all work as an offering to God — abandoning attachment to results — remains untouched by Karmic reaction or sin, just as a lotus leaf never gets wet by water. (5.10)

यो मां पश्यति सर्वत्र, सर्वं च मयि पश्यति ।
तस्याहं न प्रणश्यामि, स च मे न प्रणश्यति ॥६.३०॥

जो मनुष्य सब जगह तथा सब में मुझ परब्रह्म परमात्मा को ही देखता है, और सबको मुझ में ही देखता है, मैं उससे अलग नहीं रहता तथा वह भी मुझ से दूर नहीं होता. (६.३०)

One who sees Me everywhere (and in everything), and beholds everything in Me, is not separated from Me, and I am not separated from him. (6.30)

चतुर्विधा भजन्ते मां, जनाः सुकृतिनोऽर्जुन ।
आर्तो जिज्ञासुर् अर्थार्थी, ज्ञानी च भरतर्षभ ॥७.१६॥

हे अर्जुन, चार प्रकार के उत्तम पुरुष – दुख से पीड़ित, परमात्मा को जानने की इच्छा बाले जिज्ञासु, धन या किसी इष्टफल की इच्छा वाले, तथा ज्ञानी – मुझे भजते हैं. (७.१६)

Four types of virtuous ones worship or seek Me, O Arjuna. They are: the distressed, the seeker of Self-knowledge, the seeker of wealth, and the enlightened one (who has experienced the Supreme Being). (7.16)

बहूनां जन्मनाम् अन्ते, ज्ञानवान् मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वम् इति, स महात्मा सुदुर्लभः ॥७.१९॥

अनेक जन्मों के बाद ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर कि "यह सब कुछ कृष्णमय है," मनुष्य मुझे प्राप्त करते हैं; ऐसे महात्मा बहुत दुर्लभ हैं. (७.१९)

After many births, the enlightened one resorts to Me by realizing that everything is, indeed, My manifestation. Such a great soul is very rare. (7.19)

अव्यक्तं व्यक्तिम् आपन्नं, मन्यन्ते माम् अबुद्धयः ।
परं भावम् अजानन्तो, ममाव्ययम् अनुत्तमम् ।।७.२४।।

अज्ञानी मनुष्य मुझ परब्रह्म परमात्मा के – मन, बुद्धि, तथा वाणी से परे, परम अविनाशी – दिव्यरूप को नहीं जानने और समझने के कारण ऐसा मान लेते हैं कि मैं बिना रूप वाला निराकार हूँ; तथा रूप धारण करता हूँ. (७.२४)

The ignorant ones — unable to completely understand My immutable, incomparable, incomprehensible, and transcendental form and existence — believe that I, the Supreme Being, am formless and take forms or incarnate. (7.24)

यं यं वापि स्मरन् भावं, त्यजत्य् अन्ते कलेवरम् ।
तं तं एवैति कौन्तेय, सदा तद्भावभावितः ॥८.०६॥

हे अर्जुन, मनुष्य मरने के समय जिस किसी भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है, वह सदा उस भाव के चिन्तन करने के कारण उसी भाव को प्राप्त होता है. (८.०६)

Whatever object one remembers as one leaves the body at the end of life, that object is attained. Thought of whatever object prevails during one's lifetime, one remembers only that object at the end of life and achieves it. (8.06)

तस्मात् सर्वेषु कालेषु , माम् अनुस्मर युध्य च ।
मय्य् अर्पितमनोबुद्धिर् , माम् एवैष्यस्य् असंशयम् ।।८.०७।।

इसलिए हे अर्जुन, तू सदा मेरा स्मरण कर, और अपना कर्तव्य कर. इस तरह मुझ में अर्पण किए मन और बुद्धि से युक्त होकर निःसन्देह तुम मुझको ही प्राप्त होगा. (८.०७)

Therefore, always remember Me and do your duty. You shall certainly attain Me if your mind and intellect are ever focused on Me. (8.07)

अनन्याश् चिन्तयन्तो मां, ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां, योगक्षेमं वहाम्यहम् ।।९.२२।।

जो भक्तजन अनन्य भावसे चिन्तन करते हुए मेरी उपासना करते हैं, उन नित्ययुक्त भक्तों का योगक्षेम मैं स्वयं वहन करता हूँ. (९.२२)

I personally take care of both the spiritual and material welfare of those ever-steadfast devotees who always remember and adore Me with single-minded contemplation. (9.22)

पत्रं पुष्पं फलं तोयं, यो मे भक्त्या प्रयच्छति ।
तद् अहं भक्त्युपहृतम् , अश्नामि प्रयतात्मनः ॥९.२६॥

जो मनुष्य प्रेमभक्ति से पत्र, फूल, फल, जल, आदि कोई भी वस्तु मुझे अर्पण करता है, तो मैं उस शुद्धचित्त वाले भक्त का वह प्रेमोपहार केवल स्वीकार ही नहीं करता, उसका भोग भी करता हूँ.

Whosoever offers Me a leaf, a flower, a fruit, or water with devotion, I accept and eat the offering of devotion by the pure-hearted. (9.26)

मन्मना भव मद्भक्तो, मद्याजी मां नमस्कुरु ।
माम् एवैष्यसि युक्त्वैवम् , आत्मानं मत्परायणः ॥९.३४॥

मुझ में मन लगा, मेरा भक्त बन, मेरी पूजा कर, मुझे प्रणाम कर. इस प्रकार मेरा परायण होने से तू मुझे ही प्राप्त होगे. (९.३४)

Always think of Me, be devoted to Me, worship Me, and bow down to Me. Thus, uniting yourself with Me by setting Me as the supreme goal and the sole refuge, you shall certainly come to Me. (9.34)

अहं सर्वस्य प्रभवो, मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।
इति मत्वा भजन्ते मां, बुधा भावसमन्विताः ॥१०.०८॥

मैं ही सबकी उत्पत्ति का कारण हूं, और मुझ से ही जगत् का विकास होता है. ऐसा जानकर बुद्धिमान् भक्तजन श्रद्धापूर्वक मुझ परमेश्वर को ही निरन्तर भजते हैं. (१०.०८)

I am the origin of all. Everything evolves from Me. The wise who understand this adore Me with love and devotion. (10.08)

मत्कर्मकृन् मत्परमो, मद्भक्तः सङ्गवर्जितः ।
निर्वैरः सर्वभूतेषु , यः स माम् एति पाण्डव ॥११.५५॥

हे अर्जुन, जो पुरुष मेरे लिए ही कर्म करता है, मुझ पर ही भरोसा रखता है, मेरा भक्त है, तथा जो आसक्ति रहित और निर्वैर है, वही मुझे प्राप्त करता है. (११.५५)

One who dedicates all works to Me and to whom I am the supreme goal, who is my devotee, who has no attachment, and who is free from malice toward any creature — reaches Me, O Arjuna. (See also 8.22) (11.55)

मय्येव मन आधत्स्व, मयि बुद्धिं निवेशय ।
निवसिष्यसि मय्येव, अत ऊर्ध्वं न संशयः ॥१२.०८॥

मुझ में ही अपना मन लगा, और बुद्धिसे मेरा ही चिन्तन कर, इसके उपरान्त निःसंदेह तुम मुझ में ही निवास करोगे. (१२.०८)

Therefore, focus your mind on Me and let your intellect dwell upon Me alone through meditation and contemplation. Thereafter, you shall certainly attain Me. (12.08)

समं सर्वेषु भूतेषु , तिष्ठन्तं परमेश्वरम् ।
विनश्यत्स्व् अविनश्यन्तं, यः पश्यति स पश्यति ॥१३.२७॥

जो पुरुष अविनाशी परमेश्वर को ही समस्त नश्वर प्राणियों में समान भाव से स्थित देखता है, वही वास्तव में ईश्वर का दर्शन करता है. (१३.२७)

One who sees the one and the same imperishable Supreme Lord dwelling as Spirit (or Ishvara) equally within all perishable beings, truly sees. (13.27)

मां च योऽव्यभिचारेण, भक्तियोगेन सेवते ।
स गुणान् समतीत्यैतान् , ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥१४.२६॥

जो पुरुष अनन्य भक्ति से मेरी उपासना करता है, वह प्रकृति के तीनों गुणों को पार करके परब्रह्म परमात्मा की प्राप्ति के योग्य हो जाता है. (१४.२६)

One who serves Me with love and unswerving devotion transcends the three modes of material Nature and becomes fit for Nirvana. (See also 7.14 and 15.19) (14.26)

सर्वस्य चाहं हृदि संनिविष्टो, मत्तः स्मृतिर् ज्ञानम् अपोहनं च ।
वेदैश्च सर्वैर् अहम् एव वेद्यो, वेदान्तकृद् वेदविद् एव चाहम् ॥

मैं ही सभी प्राणियों के अन्तःकरण में स्थित हूं. स्मृति, ज्ञान, तथा शंका समाधान (विवेक या समाधि द्वारा) भी मुझ से ही होता है. समस्त वेदों के द्वारा जानने योग्य वस्तु, वेदान्त का कर्ता, तथा वेदों का जानने वाला भी मैं ही हूँ. (१५.१५)

And I am seated in the inner psyche of all beings. Memory, Self-knowledge, and removal of doubts come from Me. I am, in truth, that which is to be known by the study of all the Vedas. I am, indeed, the author as well as the student of the Vedas. (See also 6.39) (15.15)

त्रिविधं नरकस्येदं , द्वारं नाशनम् आत्मनः ।
कामः क्रोधस् तथा लोभस् , तस्माद् एतत् त्रयं त्यजेत् ॥१६.२१॥

काम, क्रोध, और लोभ मनुष्य को नरक की ओर ले जाने वाले तीन रास्ते हैं, इसलिए इन तीनों का त्याग करना चाहिए. (१६.२१)

Lust, anger, and greed are the three gates of hell leading to the downfall (or bondage) of the individual. Therefore, one must (learn to) give up these three. (16.21)

अनुद्वेगकरं वाक्यं, सत्यं प्रियहितं च यत् ।
स्वाध्यायाभ्यसनं चैव, वाङ्मयं तप उच्यते ॥१७.१५॥

वाणी वही अच्छी है जो दूसरों के मन में अशान्ति पैदा न करे; जो सत्य, प्रिय, और हितकारक हो; तथा जिसका उपयोग शास्त्रों के पढ़ने में हो. (१७.१५)

Speech that is non-offensive, truthful, pleasant, beneficial, and is used for the regular reading aloud of scriptures is called the austerity of word. (17.15)

भक्त्या माम् अभिजानाति, यावान् यश् चास्मि तत्त्वतः ।
ततो माम् तत्त्वतो ज्ञात्वा , विशते तदनन्तरम् ॥१८.५५॥

मुझे श्रद्धा और भक्ति के द्वारा ही जाना जा सकता है कि मैं कौन हूँ और क्या हूँ. मुझे जानने के पश्चात् मनुष्य मुझ में ही प्रवेश कर जाता है. (१८.५५)

By devotion one truly understands what and who I am in essence. Having known Me in essence, one immediately merges with Me. (See also 5.19) (18.55)

ईश्वरः सर्वभूतानां, हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन् सर्वभूतानि, यन्त्रारूढानि मायया ॥१८.६१॥

हे अर्जुन, ईश्वर सभी प्राणियों के हृदय में स्थित रह कर अपनी माया के द्वारा मनुष्य को कठपुतली की तरह नचाता रहता है. (१८.६१)

The Supreme Lord — abiding as the controller in the inner psyche of all beings, O Arjuna — causes them to revolve, by His power of Maya, like a puppet mounted on a machine. (18.61)

सर्वधर्मान् परित्यज्य, मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो, मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥१८.६६॥

सम्पूर्ण कर्मों (में अहंकार और आसक्ति) का परित्याग करके तुम केवल मेरा (विधान का) ही आश्रय लो. शोक मत करो, मैं तुम्हें समस्त पापों (अर्थात् कर्म के बन्धनों) से मुक्त कर दूंगा. (१८.६६)

Setting aside (doership and attachment in) all duties, take refuge in My will alone. I shall liberate you from all sins. Do not grieve. (18.66)

य इमं परमं गुह्यं, मद्भक्तेष्व् अभिधास्यति ।
भक्तिं मयि परां कृत्वा, माम् एवैष्यत्य् असंशयः ॥१८.६८॥

जो पुरुष श्रद्धा और भक्ति पूर्वक (गीता के) इस ज्ञान का मेरे भक्तों के बीच प्रचार और प्रसार करेगा, वह मेरा सबसे प्यारा होगा और निःसन्देह मुझे प्राप्त करेगा. (१८.६८)

One who shall propagate this supreme secret philosophy — the transcendental knowledge of the Gita — amongst My devotees, shall be performing the highest devotional service to Me and shall certainly come to Me.

न च तस्मान् मनुष्येषु कश्चिन् मे प्रियकृत्तमः ।
भविता न च मे तस्माद् अन्यः प्रियतरो भुवि ॥६९॥

उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करने वाला कोई मनुष्य नहीं होगा; और न मेरा उससे ज्यादा प्रिय इस पृथ्वी पर कोई दूसरा होगा. (१८.६९)

No other person shall do a more pleasing service to Me, and no one on the earth shall be more dear to Me. (18.68-69)

संजय उवाच –
यत्र योगेश्वरः कृष्णो, यत्र पार्थो धनुर्धरः ।
तत्र श्रीर् विजयो भूतिर् , ध्रुवा नीतिर् मतिर् मम ।१८.७८।।

संजय बोले – जहां भी, जिस देश या घर में, शास्त्रधारी श्रीकृष्ण तथा शस्त्रधारी अर्जुन दोनों होंगे; वहीं श्री, विजय, विभूति, और नीति आदि सदा विराजमान रहेंगी. ऐसा मेरा अटल विश्वास है. (१८.७८)

Wherever there will be both Krishna, the Lord of yoga (or Dharma in the form of the scriptures), and Arjuna with the weapons of duty and protection, there will be everlasting prosperity, victory, happiness, and morality. This is my conviction. (18.78)

हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत् हरिः ॐ तत्सत्
श्रीकृष्णार्पणं अस्तु शुभं भूयात्
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

गीता सत्संग वा ध्यान केन्द

Gita Satsang & Dhyan Kendra, INDIA Branch and affiliated Centers Contacts:

1. **Yog Chetana Samaj,** Phone: 093 087 07419
   (President: YogaGuru Chhatrapati Arunodaya Singh, Patna, Bihar).
2. **Maharshi VedInformatics & Research Centre** Phone: 0999 863 8803
   (Founder-Director: Dr. Chakradhar Frend, GUJARAT)
3. Pankaj Dhadhuk & Vijay Jasoliya, Surat, GUJARAT Mo. 0982 514 5232
4. Rajendra Singh Sharawat, Vadodara, GUJARAT. Mo. 0942 760 3048
5. Dr. Bhavin Bhatt, Bhavnagar, GUJARAT. Mo. 0982 557 7935
6. Bhavesh Joshi, Ahmedabad, GUJARAT. Mo. 0982 431 7666
7. Dr. T.S. Ramakrishna, Earthsystem Sciences Awareness & Research Association (**ESWARA**), Hyderabad, AP (Mo. 944 028 5483, 40 236 08 890
8. Vineet Sharma <vineetsharma95@yahoo.com> 941 714 4730

An invitation to join International Gita Society

Join the Board of Directors by just taking any Gita related project of your choice. No money is ever asked from our directors, just Seva. You will be free to execute your project the way you want it and the Society will provide guidance and tax-deduction benefits. Here are few things you can do to help our mission:

Distribute our free pocket size Gitas to friends, libraries, schools; **2**. Translate Gita in any language of your choice. We will get it published, **3.** Write an article for our website, **4.** Start a Gita study group or a branch of the IGS, **5.** Help our "Prison Ashram Project", "Gita for Children Project", or "A Gita in Every Home and Hotel Room Project" **6.** Help any one of our major International branches in Canada, Brazil, Belgium, Hong Kong and India.

Worldwide Acclaim for Our Gita Translation

" .... A wonderful translation. It's about time that we get a new translation of the Bhagavad-Gita. Dr. Prasad takes a much more low-key approach, simply translating the Gita to the best of his ability and allowing the reader to make sense of it rather than forcing his own opinions on others. **More accurate than most other translations and rendered into modern prose, this makes an excellent place to start with if you're new to Eastern thought."** *— Gsibbery, Baton Rouge, USA*

" .... American Gita Society now offers a translation, rendering thought provoking delicacy for the scholar, and at the same time provides unbiased commentaries that can be easily understood by the layperson. This rendition does not endorse, propagate, or oppose any causes, and **delivers a translation that is devoid of all personal motivation and speculation ....** " *— Douglas Remington, Los Angeles, 1997*

"…. I want to implore your organization to continue spreading the truth found in the Gita to those who seek **spiritual transcendence from the fetters of commercialism…."** *— Steven Blackwell, New York*

" …. I am currently creating a textbook on ancient world cultures on the World-Wide Web. I would like to include the translation of the Gita by Dr. Ramananda Prasad in my site. I am interested in representing India fairly, and I fear that the translation of the Gita by Sir Edwin Arnold that is distributed all over the net will do more to **turn students away rather than introduce them fairly to the text….**" *— Prof. Anthony Beavers, University of Evansville, Indiana, USA*

How to start a Gita Study Group.

1 Talk to few like-minded people in your friend and neighborhood circle about the idea of starting a Gita Satsang/Study group and arrange a meeting with the **spiritually inclined people** and decide time, place, and how often the group should meet. Evenings and weekends are usually preferred time. The meeting place could be a local school, temple/church, conference room of an office building, or a public library. **You can meet at home if the spouse cooperates and she is also interested in Gita Study.** The frequency of the meeting could be once a month, twice a month, or every Saturday/Sunday. The duration of Satsang should be one to 1.5 hours.

2. Few **short Bhajans** (3 to 4 only) **should be included** in the beginning or towards the end of Satsang. Guest speakers may also be invited if possible.

3. Select a Gita book that has verses and/or explanation in English and local language and is easy to understand by all. Start with Chapter 1. Everybody reads one verse turn by turn. The person who reads the verses also explains what is his/her understanding of that verse. Then others who wish to participate in discussions are asked to give their explanation/ understanding and/or question or clarification. Moderator makes sure that people dont start arguing/verbal fighting. After one verse is read and discussed, another verses is read and explained by another person or the moderator. Some people who do not want to discuss or feel shy about discussing, he/she should say "I will

pass on". And the next person reads and discusses. Water, tea or light Prasadam in the end may be served. Please download our 40 pages (size 5.4" x 8.1") booklet in PDF that can be printed locally from:

http://www.gita-society.com/publications2/hindigita40b.pdf

http://www.gita-society.com/bhagavad-gita/silverbook.pdf

The initial cost of printing will be reimbersed by the International Gita Society. This hindi gita may be distributed to all by charging a nominal, very affordable donation-price of Rs 10/= to prevent its misuse and recover the cost so that its publication becomes self-sustaining.

सहयोग दान अथवा गीता का अपने प्रान्तीय भाषा में अनुवाद के लिए संपर्क करें

--

INTERNATIONAL GITA SOCIETY (IGS)®

511 Lowell Place, Fremont, CA 94536, USA

Phone (510) 791 6953, Fax: (510) 791 6993

Email: sanjay@gita-society.com

Visit our websites for free downloading Gita in 14 different languages:

www.gita-society.com
www.GitaInternational.com (to Listen Gita in Audio)
www.Gita4Free.com for absolutely FREE pocket size Gita in English sent anywhere in the world from Hong Kong
www.gita-society.org.br (Gita Society of Brazil)

www.gita4free.com (Hong Kong Affiliate)

श्री गीता चालीसा

गीता का हिन्दी तथा सरल अंग्रेजी अनुवाद (संस्कृत के श्लोक तथा व्याख्या सहित) उपलब्ध हैं –

मोतीलाल बनारसीदास पब्लिशर्स

४१ यू. ए. बंगलो रोड, जवाहर नगर, दिल्ली ११० ००७
मुम्बई ४०० ०२६, बंगलोर ५६० ०११, पुने ४११ ००२
चेन्नई ६०० ००४, कोलकाता ७०० ०१७, पटना ८०० ००४